

Feminism for Polarised Times: A Call for Compassionate Engagement



SOURCE : THE HINDU

In today's divisive climate, feminist discourse must evolve to be more inclusive and nuanced. While structural inequalities must be addressed, equating all gender-related issues under a singular narrative can blur distinctions between privilege and vulnerability. Writer Ruchi Gupta argues for a feminism that acknowledges complexity — one that balances public policy reform with everyday negotiations within families. Instead of starting with antagonism, feminism should consider empathy and cooperation, especially among marginalised men. A compassionate feminism can distinguish between systemic injustice and personal dynamics, and work towards solidarity rather than division.

Key Points:

- Feminist discourse often flattens differences between interpersonal and structural issues.
- Daily negotiations and small acts contribute significantly to gender progress.
- Oppression must be addressed, but context matters in evaluating relationships.
- Recognising men's emotional and economic struggles can build solidarity.
- A compassionate, complexity-embracing feminism avoids unnecessary antagonism.

धुवीकृत समय में नारीवाद: सहानुभूतिपूर्ण सोच की ज़रूरत

आज के तनावपूर्ण समय में नारीवादी विमर्श को और अधिक समावेशी और संवेदनशील होने की आवश्यकता है। लेखिका रुचि गुप्ता कहती हैं कि सभी महिलाओं की समस्याओं को एक ही दृष्टिकोण से देखना उचित नहीं है। रोज़मर्रा के जीवन में छोटे-छोटे बदलाव और पारिवारिक बातचीत भी सामाजिक बदलाव लाने में अहम भूमिका निभाते हैं। लेख का मूल विचार यह है कि यदि हम हर व्यक्तिगत व्यवहार को केवल पितृसत्ता के चश्मे

से देखेंगे, तो हम कई मानवीय पहलुओं को नज़रअंदाज़ कर देंगे। इस समय हमें एक ऐसा नारीवाद चाहिए जो जटिलताओं को समझे, सहानुभूति रखे और विभाजन नहीं, सहयोग की भावना पैदा करे।

मुख्य बिंदु:

- निजी और संरचनात्मक मुद्दों को एक जैसा मानना जमीनी हकीकत को धुंधला करता है।
- बदलाव केवल आंदोलनों से नहीं, रोजमर्रा की जिंदगी की बातचीत से भी आता है।
- नारीवाद को वर्ग, स्थान और संदर्भ के आधार पर लचीला होना चाहिए।
- हाशिये पर खड़े पुरुषों की भावनात्मक व आर्थिक चुनौतियों को समझना जरूरी है।
- सहानुभूतिपूर्ण नारीवाद समाज में सहयोग बढ़ा सकता है, टकराव नहीं।

1. According to Ruchi Gupta, what is a risk of applying a purely structural lens to personal relationships?

- A. It strengthens patriarchy
- B. It oversimplifies diverse interpersonal dynamics
- C. It improves feminist solidarity
- D. It supports legal protections

Answer: B. It oversimplifies diverse interpersonal dynamics

Applying a structural lens too rigidly can flatten the complexities of human relationships and ignore nuances like mutual care and shared responsibilities.

1. लेखिका के अनुसार, व्यक्तिगत संबंधों को पूरी तरह से संरचनात्मक दृष्टिकोण से देखने का क्या खतरा है?

- A. यह पितृसत्ता को मज़बूत करता है
- B. यह विभिन्न व्यक्तिगत स्थितियों को अधिक जटिल बना देता है
- C. यह फेमिनिस्ट एकता को बढ़ाता है
- D. यह कानूनी सुरक्षा को बेहतर बनाता है

उत्तर: B. यह विभिन्न व्यक्तिगत स्थितियों को अधिक जटिल बना देता है

व्यक्तिगत रिश्तों को केवल सत्ता के संघर्ष के रूप में देखना रिश्तों की गहराई और जटिलता को नज़रअंदाज़ करता है।

2. What does the author suggest as a strategic need for feminist discourse in current polarised times?

- A. Stronger legal actions against men
- B. Total separation of personal and political issues
- C. Adoption of a more compassionate and empathetic feminism
- D. Rejection of male perspectives

Answer: C. Adoption of a more compassionate and empathetic feminism

A more empathetic feminism, Gupta argues, will reduce backlash and create space for inclusive dialogue and change.

2. वर्तमान ध्रुवीकृत माहौल में लेखिका किस प्रकार के नारीवाद की आवश्यकता बताती हैं?

- A. पुरुषों के खिलाफ कठोर कानूनी कार्यवाही
- B. व्यक्तिगत और राजनीतिक मुद्दों को पूरी तरह अलग करना
- C. एक सहानुभूतिपूर्ण और समझदारी से भरा नारीवाद
- D. पुरुषों के दृष्टिकोण को अस्वीकार करना

उत्तर: C. एक सहानुभूतिपूर्ण और समझदारी से भरा नारीवाद

लेखिका का मानना है कि सहानुभूतिपूर्ण नारीवाद टकराव को कम करेगा और सहयोग की भावना को बढ़ाएगा।

